संजीव रिफ्रेशर
हिन्दी

क्षितिज भाग-1 एवं कृतिका भाग-1

(कक्षा-9)

पाठ्यक्रम 'अ'

[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

मुख्य विशेषताएँ

- **CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित**
- **पाठ्यक्रमानुसार वस्तुनिष्ठ/बहुचयनात्मक प्रश्नों का समावेश**
- सभी गद्य पाठों के लेखकों का जीवन परिचय
- सभी गद्य पाठों का सार
- सभी पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
- गद्यांश पर विषयवस्तु का ज्ञान, बोध एवं अभिव्यक्ति पर आधारित प्रश्न
- सभी कवियों का जीवन परिचय
- सभी पद्य पाठों का परिचय
- सम्पूर्ण कविताओं का कठिन शब्दार्थ सहित भावार्थ
- कविताओं पर बोध-परख सम्बन्धी प्रश्न
- पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
- पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
- सरल, स्तरीय भाषा-शैली में विषय-प्रतिपादन
- अपठित बोध
- व्याकरण
- अनुच्छेद लेखन, पत्र लेखन, लघुकथा लेखन, ई-मेल लेखन, संवाद लेखन एवं सूचना लेखन

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

जयपुर

[मूल्य : ₹ 240.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर–3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-1

गद्य-खण्ड

1.	दो बैलों की कथा	*(प्रेमचन्द)*	1-21
2.	ल्हासा की ओर	*(राहुल सांकृत्यायन)*	22-38
3.	उपभोक्तावाद की संस्कृति	*(श्यामाचरण दुबे)*	39-51
4.	साँवले सपनों की याद	*(जाबिर हुसैन)*	52-66
5.	प्रेमचन्द के फटे जूते	*(हरिशंकर परसाई)*	67-82
6.	मेरे बचपन के दिन	*(महादेवी वर्मा)*	83-99

काव्य-खण्ड

7.	कबीर	*(साखियाँ एवं सबद)*	100-115
8.	ललद्यद	*(वाख)*	116-126
9.	रसखान	*(सवैये)*	127-137
10.	माखनलाल चतुर्वेदी	*(कैदी और कोकिला)*	138-153
11.	सुमित्रानंदन पंत	*(ग्राम श्री)*	154-165
12.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	*(मेघ आए)*	166-178
13.	राजेश जोशी	*(बच्चे काम पर जा रहे हैं)*	179-189

कृतिका भाग-1

1.	इस जल प्रलय में	*(फणीश्वरनाथ रेणु)*	190-195
2.	मेरे संग की औरतें	*(मृदुला गर्ग)*	196-204
3.	रीढ़ की हड्डी	*(जगदीश चंद्र माथुर)*	205-214

अपठित बोध

1.	अपठित गद्यांश	215-236
2.	अपठित काव्यांश	236-258

व्याकरण

1. शब्द-निर्माण	259-286
I. उपसर्ग	259-266
II. प्रत्यय	267-274
III. समास	275-286
2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद	287-293
3. अलंकार	294-302

लेखन

1. अनुच्छेद-लेखन	303-321
2. पत्र-लेखन (औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र)	322-353
3. लघुकथा लेखन	354-361
4. ई-मेल लेखन	362-373
5. संवाद-लेखन	374-378
6. सूचना लेखन	379-393

हिन्दी कक्षा-9
क्षितिज भाग-1

गद्य-खण्ड

1 दो बैलों की कथा

(प्रेमचन्द)

लेखक परिचय

जीवन-परिचय—महान् कथाकार एवं उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 में बनारस के पास 'लमही' गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचन्द का बचपन अभावों में बीता और अभावों के बीच ही उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा विभाग में नौकरी की, परन्तु असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और लेखन-कार्य में पूरी तरह समर्पित हो गये। पहले ये नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे, बाद में हिन्दी में प्रेमचन्द नाम से लिखने लगे। इन्होंने 'हंस' पत्रिका का सम्पादन किया। सन् 1936 में इनका देहान्त हो गया।

रचनाएँ—प्रेमचन्द ने तीन सौ से अधिक कहानियाँ और ग्यारह उपन्यास लिखे। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर', के आठ भागों में संकलित हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं—'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान'। 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' उनके दो नाटक हैं तथा उनके द्वारा लिखित निबन्ध 'कुछ विचार' तथा 'विविध प्रसंग' नाम से संकलित हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ—मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य का प्रमुख स्वर समाज-सुधार, देशभक्ति एवं राष्ट्रीय जागरण है। उर्दू में लिखित उनके 'सोजे वतन' को अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। वे साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने भारत के अनेक गाँवों एवं शहरों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का, दलितजनों, कृषकों एवं श्रमिकों की दशा का मार्मिक चित्रण किया, जिसमें यथार्थ के साथ आदर्शों का समावेश हुआ है। समाज में व्याप्त बुराइयों—दहेज, नशाखोरी, अनमेल विवाह, छुआछूत, नारी-दुर्दशा आदि की उनके साहित्य में प्रभावशाली अभिव्यक्ति मिलती है।

भाषा-शैली—प्रेमचन्द की भाषा अत्यन्त सरल, सजीव एवं मुहावरेदार है। उन्होंने उर्दू एवं तद्भव शब्दों का यथावसर प्रयोग किया है। लोकभाषा का प्रयोग करने में वे सिद्धहस्त रहे हैं। कथानक के पात्रों की मनोदशा एवं वातावरण के अनुसार शब्दों का चयन करने में वे सजग रहे हैं। हिन्दी भाषा को साहित्यिक भाषा का रूप देने में उनका विशेष योगदान रहा है। प्रेमचन्द ने वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, मनोभावाभिव्यंजक, चरित्र-विश्लेषणात्मक आदि शैलियों का स्वाभाविक प्रयोग किया है। संवाद-शैली के कारण उनकी कहानियाँ जीवन्त बन गई हैं।

पाठ का सार

'दो बैलों की कथा' प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी है। इसमें उन्होंने कृषक समाज और पशुओं के भावात्मक सम्बन्ध का वर्णन किया है। साथ ही यह भी बताया है कि स्वतन्त्रता सहज में नहीं मिलती, उसके लिए बार-बार

संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार परोक्ष रूप में इससे भारतीयों की परतन्त्रता से मुक्त होने की भावना व्यंजित की गई है। इस कहानी का सार इस प्रकार है-

हीरा और मोती सच्चे मित्र-पशुओं में गधा सबसे बुद्धिहीन माना जाता है, वह सीधा एवं सहनशील होता है। गधे से कुछ कम सीधा बैल होता है। झूरी काछी के दो बैल थे-हीरा और मोती। दोनों पछाईं जाति के डील-डौल और सुन्दर थे। लम्बे समय से साथ रहने से उन दोनों में गहरा प्रेम था। वे दिन भर काम करने के बाद शाम को एक-दूसरे को चाट-सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते थे।

झूरी द्वारा बैलों को ससुराल भेजना-संयोग से एक बार झूरी ने दोनों बैलों को अपनी ससुराल भेज दिया। बैलों ने समझा कि मालिक ने हमें बेच दिया है। झूरी का साला गया उन्हें बड़ी कठिनाई से ले गया। वहाँ उनका मन नहीं लगा। नया स्थान उन्हें अच्छा नहीं लगा।

बैलों का वापिस आना-रात में दोनों बैलों ने एक-दूसरे को देखा और जोर लगाकर मजबूत पगहे तोड़कर झूरी के घर की ओर चल पड़े। सुबह झूरी ने चरनी पर बैलों को देखा, तो दोनों की आँखों में विद्रोह-भरा स्नेह था। गाँव के बच्चों ने तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया, परन्तु झूरी की पत्नी नाराज हो गई। उसने गुस्से में बैलों के सामने सूखा चारा डाल दिया, मालकिन के डर से नौकर उन्हें खली नहीं दे सका।

बैलों को दुबारा ससुराल भेजना-दूसरे दिन झूरी का साला आया और वह फिर से हीरा-मोती को ले गया। वहाँ उसने मोटी रस्सियों से बाँधा और सूखा चारा दिया। अगले दिन बैलों ने हल में जुतने से इनकार कर दिया, तो गया ने डंडे मारे। वे हल लेकर भागे, परन्तु पकड़े गये। अगले दिन फिर सूखा चारा मिला। लेकिन शाम के समय भैरो की नन्हीं लड़की दो रोटियाँ लेकर आयी, रोटियाँ खाकर हीरा-मोती का मन प्रसन्न हो गया। उस लड़की की सौतेली माँ उसे परेशान करती थी, इसलिए मोती भैरो और उसकी नयी पत्नी को पटक देना चाहता था, परन्तु लड़की का स्नेह देखकर चुप हो गया।

वहाँ से भाग जाना-दोनों बैल रात में भागना चाहते थे। उस नन्हीं लड़की ने आकर उन दोनों की रस्सियाँ खोल दीं। वे लड़की के स्नेह के कारण भागना नहीं चाहते थे, परन्तु लड़की ने शोर मचाया कि दोनों बैल भागे जा रहे हैं। हीरा-मोती भाग पड़े। गया ने उनका पीछा किया। दोनों बैल तेजी से भागने पर रास्ता भटक गये और एक गाँव को पार करते हुए मटर के एक खेत में घुस गये। भूख से व्याकुल दोनों ने जी-भर मटर खाये और उछलने-कूदने लगे।

साँड से लड़ाई करना-अचानक उनके सामने एक बड़ा साँड आ गया। हीरा-मोती ने निश्चय किया कि कैसे इसका मुकाबल किया जाये। साँड जब एक पर सींग चलता तो दूसरा उसके पेट में अपना सींग घुसेड़ देता। इस तरह हीरा-मोती ने साँड का मुकाबला किया। साँड को दो-दो शत्रुओं से एक साथ लड़ने का अनुभव न था। इसलिए वह बेदम हो गिर पड़ा, तब उन दोनों ने उसे छोड़ दिया।

हीरा-मोती का पकड़ा जाना-दोनों आगे बढ़े और मटर के खेत में घुस गये। खेत के रखवालों ने उन्हें घेरा, हीरा तो भाग गया, परन्तु मोती कीचड़ में फँस गया। मोती को फँसा देखकर हीरा लौट आया। इस तरह रखवालों ने दोनों को पकड़ कर काँजीहौस में बन्द कर दिया।

कसाई के हाथ में पड़ना-काँजीहौस में हीरा-मोती को सारे दिन खाने को कुछ नहीं मिला। वहाँ पर बन्द भैंसें, बकरियाँ, घोड़े एवं गधे भी भूखे थे। हीरा-मोती ने भागने का निश्चय किया और उन्होंने काँजीहौस की दीवार तोड़ दी। परन्तु अन्य सब पशुओं के भाग जाने पर भी वे भाग नहीं सके। उन पर खूब मार पड़ी और एक सप्ताह तक वहीं भूखे बँधे रहे। एक दिन उनकी नीलामी हुई और एक दढ़ियल कसाई ने दोनों बैलों को खरीद लिया। वे अपने भाग्य को कोसते हुए उसके साथ चलने लगे।

सहसा परिचित रास्ता मिलने से झूरी के पास पहुँचना-सहसा हीरा-मोती को वह रास्ता परिचित लगा। गया उसी रास्ते से उन्हें ले गया था। तब उनके दुर्बल शरीर में जान आने लगी। झूरी का घर निकट देखकर वे दोनों

भागने लगे और अपने थान पर जाकर खड़े हो गए। उन्हें आया देखकर झूरी ने बारी-बारी से गले लगाया। दढ़ियल कसाई ने आकर उनकी रस्सियाँ पकड़ लीं और बोला कि इन्हें मैं नीलामी से खरीद लाया हूँ। वह बैलों को जबर्दस्ती ले जाने की कोशिश करने लगा। तभी मोती ने उस पर सींग चलाया, दढ़ियल डरकर भागने लगा। गाँव वालों ने भी उसे गाँव से दूर भगा दिया। झूरी ने नादों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया। गाँव में उत्साह छा गया। मालकिन ने दोनों के माथे चूम लिये।

कठिन शब्दों के अर्थ

पेज-5

परले दरजे का बेवकूफ = महामूर्ख। **सहिष्णुता** = सहनशीलता। **निरापद** = सुरक्षित। **पदवी** = नाम, उपाधि। **अनायास** = अचानक। **कुलेल** = क्रीड़ा, मस्ती। **विषाद** = दु:ख, उदासी। **पराकाष्ठा** = चरम सीमा। **अनादर** = अपमान। **कदाचित्** = शायद। **उपयुक्त** = उचित। **दुर्दशा** = बुरी हालत। **कुसमय** = बुरा समय। **गम खाना** = चुप रहना। **ईंट का जवाब पत्थर से देना** = जोरदार प्रतिक्रिया करना।

पेज-6

मिसाल = उदाहरण। **गण्य** = सम्मानित, गणनीय। **बछिया के ताऊ** = अत्यन्त मूर्ख। **पछाईं** = पालतू पशुओं की एक नस्ल। **चौकस** = चौकन्ना। **डील** = कद। **मूक** = मौन। **विचार-विनिमय** = विचारों का आदान-प्रदान। **गुप्त** = छिपी हुई। **वंचित** = ठगा हुआ, रहित। **विग्रह** = वैर-विरोध। **घनिष्ठता** = प्रगाढ़ता। **नाँद** = पशुओं के चारे का बड़ा बर्तन-सा। **गोईं** = जोड़ी।

पेज-7

पगहिया = पशु को बाँधने की रस्सी। **वाणी** = आवाज। **चाकरी** = सेवा, नौकरी। **कबूल** = स्वीकार। **जालिम** = अत्याचारी। **बेगाने** = पराये। **चरनी** = चारा खाने की जगह। **गराँव** = बैलों के गले में डाली जाने वाली फुंदेदार रस्सी। **विद्रोहमय** = विरोध से भरा हुआ। **प्रेमालिंगन** = प्रेम से बाँहों में भर लेना। **मनोहर** = मन को अच्छा लगने वाला। **अभूतपूर्व** = जो पहले न हुआ हो, अनोखा। **अभिनन्दन-पत्र** = सम्मान-पत्र।

पेज-8

प्रतिवाद = विरोध में तर्क देना। **आक्षेप** = आरोप, निन्दावचन। **नमकहराम** = स्वामी के उपकार को भूलने वाला। **मजूर** = मजदूर। **ताकीद** = चेतावनी।

पेज-9

टिटकार = मुँह से निकलनेवाला टिक-टिक का शब्द। **आहत** = घायल, पीड़ित। **व्यथा** = दु:ख।

पेज-10

कुशल = भला। **तेवर** = चेहरे का भाव। **टल जाना** = बच जाना। **मसलहत** = उचित, हितकर। **वास** = निवास। **आत्मीयता** = अपनापन।

पेज-11

थान = पशुओं को बाँधने का स्थान। **बरकत** = बढ़ती, वृद्धि। **अनाथ** = बेसहारा। **सहसा** = अचानक।

पेज-12

बेतहाशा = बिना होश-हवास के, बहुत तेज। **आहट लेना** = किसी के आने की टोह लेना। **बगलें झाँकना** = घबराकर इधर-उधर देखना। **चिन्तित** = चिन्ता से ग्रस्त। **आरजू** = विनती, प्रार्थना।

पेज-13

नौ-दो-ग्यारह होना = भाग जाना। **रगेदना** = दौड़ाना, खदेड़ना। **जोखिम** = खतरा। **संगठित** = एकजुट। **तजरबा**= अनुभव। **मल्लयुद्ध** = कुश्ती। **आदी** = अभ्यस्त। **उस्ताद** = गुरु, काफी चतुर। **जख्मी** = घायल। **बेदम** = ताकत से रहित। **तिरस्कार** = अपमान, फटकार। **बैरी** = शत्रु। **ग्रास** = कौर।

पेज–14

संगी = साथी। **काँजीहौस** = मवेशीखाना, जिसमें लावारिस पशु बन्द करके रखे जाते हैं। **साबिका** = वास्ता, सरोकार। **तृप्ति** = सन्तोष। **बूता** = बल। **चिप्पड़** = टुकड़ा।

पेज–15

उजड्डपन = शरारती स्वभाव। **देह** = शरीर। **प्रतिद्वन्द्वी** = विरोधी। **सरपट** = तेजी से। **हरज** = आपत्ति, परेशानी।

पेज–16

विपत्ति = संकट। **गर्व** = अभिमान। **भोर** = सुबह। **तृण** = तिनका। **ठठरी** = हड्डी। **मृतक** = मरा हुआ। **खरीदार** = खरीदने वाला।

पेज–17

अन्तर्ज्ञान = भीतरी ज्ञान। **टटोलना** = खोजना। **भीत** = डरा हुआ। **नाहक** = बेकार। **अश्रद्धा** = अनादर। **बोटी-बोटी काँपना** = अंग–अंग काँपना। **पागुर करना** = जुगाली करना, पशुओं द्वारा भोजन चबाने की क्रिया। **बाधित** = वध करने वाला, हत्यारा। **पुर चलना** = रहट या चमड़े के बड़े थैले (मशक) से पानी खींचना। **रेवड़** = पशुओं का समूह।

पेज–18

नगीच = नजदीक। **उन्मत्त** = पागल, मतवाला। **नीलाम** = बोली लगाकर खरीदना। **अख्तियार** = अधिकार। **रपट** = रिपोर्ट, आरोप–पत्र। **विजयी शूर** = जीता हुआ वीर।

पेज–19

बे–मारे = बिना मारे। **उछाह** = उत्साह, उमंग। **खबर लेना** = धमकाना, मारना–पीटना।

गद्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–**निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(1)

जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवक़ूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवक़ूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याही हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असन्तोष की छाया भी न दिखाई देगी।

1. आदमी को बेवकूफ बताने के लिए कौनसे जानवर से उसकी तुलना की जाती है?

(क) बकरा (ख) कुत्ता (ग) बैल (घ) गधा

2. जानवरों में गधे को बुद्धिहीन क्यों समझा जाता है?

(क) नासमझी के कारण (ख) सीधेपन के कारण
(ग) सहनशीलता के कारण (घ) सहिष्णु होने के कारण

3. कौनसा जानवर क्रोधी स्वभाव का नहीं है?

(क) कुत्ता (ख) गाय (ग) भैंस (घ) गधा